अरब विद्रोह की स्थिरता

लेखक -स्टैनली जॉनी (संपादक)

यह आलेख सामान्य अध्ययन प्रश्न पत्र-II (अंतर्राष्ट्रीय संबंध) से संबंधित है।

द हिन्दू

24 अप्रैल, 2019

"जैसा कि विरोध प्रदर्शन सूडान और अल्जीरिया में शुरू हो चुका है, कोई भी यह अनुमान लगा सकता है कि यह विरोध प्रदर्शन ट्यूनीशिया या मिस्र में हुए प्रदर्शन के समान ही होगा।"

अरब की राजनीति अब विद्रोही बन चुकी है। अरब के कई तानाशाहों को उखाड़ फेंकने वाले विरोध प्रदर्शन को आठ साल बीत चुके हैं, जिसे हम फिर से हाल के महीनों में सूडान और अल्जीरिया में सरकार-विरोधी प्रदर्शन के रूप में देख सकते हैं। इस महीने की शुरुआत में, दोनों, अब्देलअजीज बॉउटफ्लिका, जिन्होंने 20 साल तक अल्जीरिया पर शासन किया और उमर अल-बशीर, जो तीन दशकों से सूडान में थे, जनता के गुस्से के बीच, ट्यूनीशिया और मिस्र में हुए विद्रोह की यादों को पुनर्जीवित करते हैं।

जब 2010 के अंत में ट्यूनीशिया में विरोध प्रदर्शन शुरू हुआ था और अन्य देशों में धीरे-धीरे फैल गया था, तो उम्मीद की जा रही थी कि अरब दुनिया में बड़े पैमाने पर बदलाव होंगे। उम्मीद यह भी थी कि जिन देशों में,जैसे कि ट्यूनीशिया, मिस्र, यमन, लीबिया, बहरीन और सीरिया, लोग विरोध प्रदर्शन कर रहे हैं, वहाँ पुराने निरंकुश शासन को नए लोकतंत्रों से बदल दिया जाएगा। लेकिन ट्यूनीशिया को छोड़कर अरब विद्रोह की देश-विशिष्ट कहानियाँ दुखद ही रही हैं।

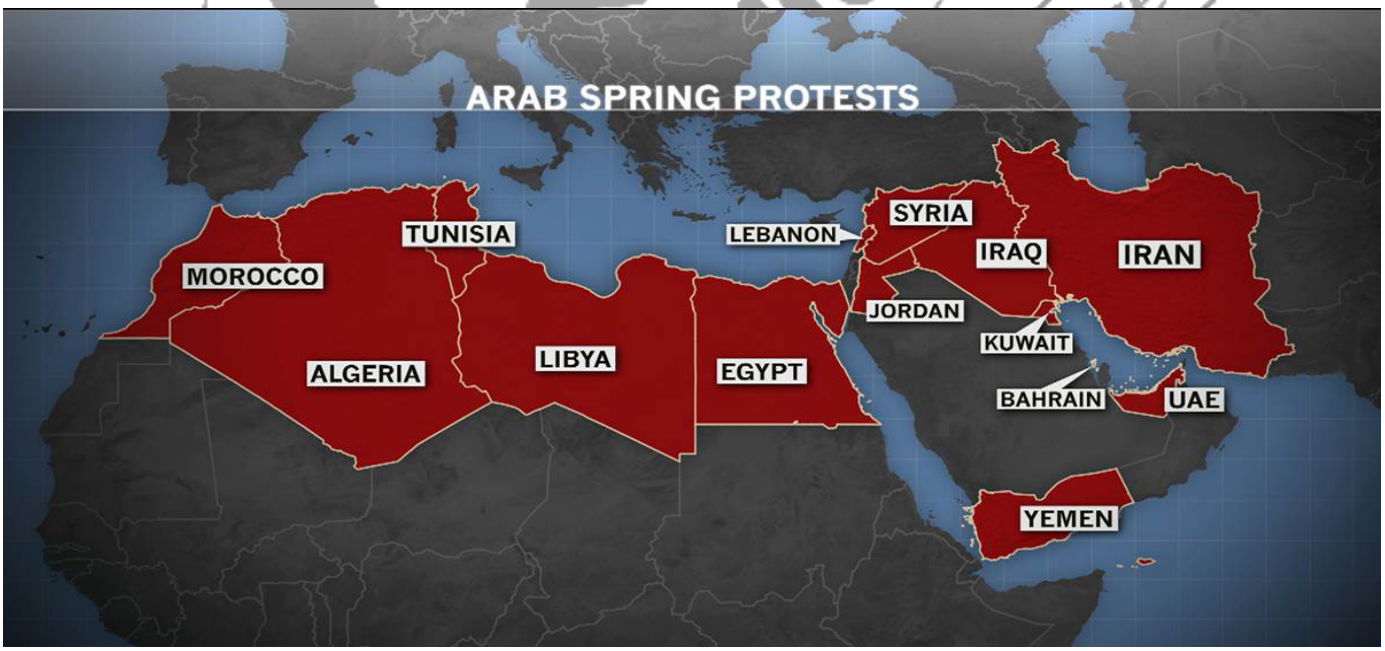

अरब स्प्रिंग 2.0?

हालांकि, इन त्रासदियों ने सूडान और अल्जीरिया में विरोध के रूप में अरब युवाओं की क्रांतिकारी भावना को कमजोर नहीं किया है। बल्कि, इसकी निरंतरता ट्यूनिस से खार्तूम और अल्जीयर्स तक है। अरब विद्रोह मूल रूप से कारकों के संयोजन से शुरू हुआ था। इन देशों में संरक्षण पर आधारित आर्थिक मॉडल चरमरा रहा था। शासक दशकों से सत्ता में थे और उनके दमनकारी शासन से आजादी की

ख्वाहिश सब के मन में थी। इससे भी महत्वपूर्ण बात यह है कि विरोध प्रकृति में पारंगत था, हालांकि क्रांतिकारियों के निशाने पर उनकी राष्ट्रीय सरकारें थीं।

विरोध प्रदर्शन के पीछे की प्रेरणा पुरानी व्यवस्था के खिलाफ एक पैन-अरबी (pan-Arabist) नाराजगी थी। यही कारण है कि यह ट्यूनिस से काहिरा, बेंगाजी और मनामा तक जंगल की आग की तरह फैल गया। हो सकता है कि वे अरब राजनीतिक व्यवस्था को फिर से बेहतर बनाने में विफल रहे हों, लेकिन विद्रोहियों के अंगारे अरब स्प्रिंग की त्रासदी से बच गए।

अधिकांश अरब अर्थव्यवस्थाएं आर्थिक संकट से घिरी हैं। अरब प्रणाली के शासक और तानाशाहों का निर्माण एक खराब स्थिति में है। वर्षों तक अरब शासकों ने संरक्षण के बदले जनता की वफादारी खरीदी, जो उस समय भय का कारक थी। यह मॉडल अधिक व्यवहार्य में नहीं है। यदि 2010-11 के विरोध ने अरब देशों को हिला दिया था, तो उन्हें 2014 में तेल की कीमतों में गिरावट ने एक और संकट में डाल दिया था। 2008 में तेल की कीमत 140 डॉलर प्रति बैरल छूने के बाद, 2016 में यह 30 डॉलर तक गिर गई थी।

दोनों तेल उत्पादक और तेल आयात करने वाले देशों पर इसका व्यापक असर पड़ा। कीमत में गिरावट के कारण, उत्पादकों को दोनों सार्वजनिक खर्च और अन्य अरब देशों के लिए सहायता खर्च में कटौती करनी पड़ी। जॉर्डन और मिस्र जैसे गैर-तेल-उत्पादक अरब अर्थव्यवस्थाओं की सहायता पर निर्भर थे, उनकी स्थिति और खराब होने लगी। मई, 2018 में, प्रस्तावित कर कानून और ईंधन की बढ़ती कीमतों के खिलाफ जॉर्डन में बड़े पैमाने पर विरोध प्रदर्शन हुए। प्रधानमंत्री हानी मुल्की के इस्तीफा देने के बाद ही प्रदर्शनकारियों ने सड़कों उतरना बंद किया, उनके उत्तराधिकारी ने कानून वापस ले लिया और किंग अब्दुल्ला द्वितीय ने मूल्य वृद्धि को रोकने के लिए हस्तक्षेप किया।

शासन में बदलाव करने वाले

सूडान और अल्जीरिया में, प्रदर्शनकारी एक कदम आगे बढ़ गए हैं। वे शासन में बदलाव की मांग कर रहे हैं, जैसा कि मिस्र और ट्यूनीशिया में उनके साथियों ने 2010 के अंत और 2011 की शुरुआत में किया था। अल्जीरियाई अर्थव्यवस्था, जो हाइड्रोकार्बन क्षेत्र पर बहुत अधिक निर्भर है, 2014 में कमोडिटी में आई मंदी के बाद और कमजोर पड़ गयी। जहाँ 2014 में जीडीपी की वृद्धि 4% से धीमी होकर 2017 में 1.6% हो गई, वहीं युवा बेरोजगारी 29% हो गई।

यह आर्थिक मंदी ऐसे समय में हो रही थी जब श्री बॉउटफ्लिका सार्वजनिक व्यस्तता से गायब थे। 2013 में एक आघात ने उनके शरीर को और पंगु बना दिया था। लेकिन जब उन्होंने इस साल एक और पाँच साल के कार्यकाल के लिए राष्ट्रपति चुनाव के लिए उम्मीदवारी की घोषणा की, तो इसने जनता को काफी प्रभावित किया। कुछ ही दिनों में, देश भर में विरोध प्रदर्शन शुरू हो गए, जिसका समापन 2 अप्रैल को इनके इस्तीफे के साथ हुआ।

सूडान का मामला भी इसी तरह का है। यह पूर्वोत्तर अफ्रीकी देश भी गंभीर आर्थिक संकट से जूझ रहा है। श्री बशीर और उनके सैन्य गुट ने तीन दशकों तक भय के माध्यम से देश पर शासन किया। लेकिन 2011 में दक्षिण सूडान के विभाजन ने अविभाजित देश के तेल भंडार के तीन-चौथाई हिस्से के साथ, नई सत्ताधारी सेना को और अधिक कमजोर बना दिया। 2014 के बाद, सूडान गहरे संकट में पड़ गया, अक्सर इसे सऊदी अरब, संयुक्त अरब अमीरात (यूएई) और यहाँ तक कि कतर, सऊदी ब्लॉक के क्षेत्रीय प्रतिद्वंद्वी जैसे अमीर अरब देशों से सहायता मांगनी पड़ती थी। सूडान की मुद्रास्फीति 73% पर है।

सूडान ईंधन और नकदी की कमी से जूझ रहा है। रोटी की बढ़ती कीमत को लेकर मध्य दिसंबर में उत्तरपूर्वी शहर अटबारा में असंतोष सबसे पहले उबल पड़ा और विरोध जल्द ही एक राष्ट्रव्यापी आंदोलन में फैल गया। श्री बशीर ने सड़कों पर उमड़े प्रदर्शनकारियों को शांत करने के लिए आपातकाल की स्थिति घोषित करने से लेकर उनके पूरे मंत्रिमंडल को बर्खास्त करने तक की कोशिश की, लेकिन प्रदर्शनकारी शासन बदलने की मांग पर डटे रहे। अंत में सेना ने 11 अप्रैल को उन्हें सत्ता से हटा ही दिया।

प्रति-क्रांतिकारी

2010-11 के मामले के समान ही 2018-19 का विरोध प्रदर्शन परा-राष्ट्रीय है अर्थात् ये विरोध प्रदर्शन कुछ ही महीनों में अम्मान से खार्तूम और अल्जीयर्स तक फैल गए हैं। राष्ट्रीय सरकारों के खिलाफ पैन-अरबी क्षोभ विरोध प्रदर्शनों के पीछे मुख्य प्रेरक शक्ति बना हुआ है, जिसने अरब की राजधानियों में खतरे की घंटी बजा दी है। लेकिन इन सभी देशों में, प्रति-क्रांतिकारी ताकतें इतनी मजबूत हैं कि प्रदर्शनकारी अक्सर अपने मुख्य लक्ष्य को प्राप्त करने में पीछे रह जाते हैं। वे तानाशाहों से छुटकारा पाने का प्रबंधन करते हैं, लेकिन उन तानाशाहों ने जो व्यवस्था बनाई है वह किसी तरह बच जाती है।

इन देशों में दो मुख्य प्रति-क्रांतिकारी ताकतें हैं। पहली, पुरानी व्यवस्था के मुख्य संरक्षक हैं अर्थात् या तो राजतंत्र या सेना।

ट्यूनीशिया एकमात्र ऐसा देश है जहाँ क्रांतिकारियों ने प्रति-क्रांतिकारियों का सफाया कर दिया है। उन्होंने जीन एल एबिडीन बेन अली की तानाशाही को उखाड़ फेंका और देश एक बहु-पक्षीय लोकतंत्र में परिवर्तित हो गया। मिस्र में सेना ने वापसी की एवं हिंसा और दमन के माध्यम से राज्य तथा समाज पर अपनी पकड़ मजबूत कर ली। जॉर्डन में सम्राट हमेशा क्रांतिकारी प्रवृतियों के खिलाफ काम करता रहा है।

दूसरा भू-राजनीतिक कर्ता हैं। लीबिया में विदेशी हस्तक्षेप ने मुअम्मर गद्दाफी को हटा दिया, लेकिन युद्ध ने लीबिया और इसके संस्थानों को नष्ट कर दिया, जिससे देश प्रतिस्पर्धी मिलिशिया (सेना) के हाथों चला गया। लीबिया को अभी हस्तक्षेप से उत्पन्न अराजकता से उबरना बाकी है। सीरिया में विदेशी हस्तक्षेप के साथ, विरोध पहले एक सशस्त्र गृहयुद्ध में बदल गया और फिर देश खुद वैश्विक खिलाड़ियों के लिए युद्ध का रंगमंच बन गया। यमन में विरोध एक सांप्रदायिक नागरिक संघर्ष में बदल गया, जिसमें विदेशी शक्तियां अलग-अलग पक्ष ले रही थीं। बहरीन में सऊदी अरब ने अपने शासकों की ओर से, मनामा के पर्ल स्क्वायर में हिंसक विरोध को समाप्त करने के लिए प्रत्यक्ष सैन्य हस्तक्षेप किया।

ऐसा ही अल्जीरिया और सूडान में भी हो सकता है। दोनों देशों में सेना ने राष्ट्रपति को हटाया, लेकिन प्रदर्शनकारियों के दबाव के बावजूद सत्ता पर अपनी पकड़ बनाए रखी। वे शासन परिवर्तन नहीं चाहते हैं। वे तानाशाही के पतन को एक क्रांति के रूप में तैयार कर रहे हैं और इसे प्रदर्शनकारियों को बेच रहे हैं, जैसा कि मिस्र की सेना ने आठ साल पहले किया था। सूडान को भू-राजनीतिक हस्तक्षेप का भी सामना करना पड़ता है।

जैसे ही सैन्य परिषद् ने सत्ता संभाली, सऊदी अरब, यू.ए.ई. और मिस्र ने सैन्य परिषद् को समर्थन की पेशकश की, वो भी ऐसे समय में जब खार्तूम में विरोध प्रदर्शन जारी है और नागरिकों की सरकार को तत्काल सत्ता सौंपने की मांग की जा रही है। सऊदी ने नई सत्ताधारी सेना को एक सहायता पैकेज की भी घोषणा की है, जिससे यह स्पष्ट होता है कि वे किसे पसंद करते हैं।

यह अरब प्रदर्शनकारियों के सामने चुनौती है। वे गुस्से में हैं। वे चाहते हैं कि व्यवस्था बदली जाए। लेकिन वे विभिन्न प्रकार के हैं। जब भी वे व्यवस्था के खिलाफ उठते रहे हैं, उन्हें लगातार प्रति-क्रांतिकारियों द्वारा पीछे धकेल दिया जाता रहा है।

GS World टीम...

सूडान और अरब स्प्रिंग

चर्चा में क्यों?

- 30 वर्षों तक अफ्रीकी देश सूडान पर शासन करने वाले राष्ट्रपति ओमर-अल-बशीर को सेना ने तख्तापलट करके अपदस्थ कर दिया है। बशीर को गिरफ्तार किया गया है।
- अब देश का संचालन सैन्य परिषद् द्वारा किया जा रहा है। अब सूडान में दो वर्ष तक सैन्य शासन रहेगा, उसके बाद देश में चुनाव करवाए जा सकते हैं।
- हालांकि, सूडान के नए सैन्य नेता ने देश की बागडोर संभालने के एक ही दिन पश्चात् अपने पद से इस्तीफा दे दिया है। देश के सैन्य शासकों का कहना है कि वे असैन्य सरकार का मार्ग प्रशस्त करेंगे।
- इस तख्तापलट के साथ ही सूडान में तीन वर्ष तक आपातकाल लागू कर दिया गया है।
- बशीर के लिए 2003 हुए में नरसंहार के आरोप में गिरफ्तारी वारंट भी जारी किया गया था, इन दंगों में 3 लाख से अधिक लोगों की मौत हुई थी।
- पिछले कई महीनों से राष्ट्रपति बशीर के विरुद्ध विरोध प्रदर्शन किये जा रहे थे।

सूडान के बारे में

- सूडान उत्तर-पूर्वी अफ्रीका में स्थित एक देश है, इसकी राजधानी खार्तूम है।
- इसके उत्तर में मिस्र, उत्तर पूर्व में लाल सागर, पूर्व में इरीट्रिया, दक्षिण-पूर्व में इथियोपिया, दक्षिण-पश्चिम में सेंट्रल अफ्रीकन रिपब्लिक, उत्तर-पश्चिम में लीबिया तथा दक्षिण में दक्षिण सूडान स्थित है।
- सूडान का क्षेत्रफल 18,86,068 वर्ग किलोमीटर है। 9 जुलाई, 2011 को सूडान से अलग होकर दक्षिण सूडान नामक एक अन्य देश अस्तित्व में आया था।

अरब स्प्रिंग क्या है?

- अरब स्प्रिंग लोकतंत्र समर्थक विद्रोह की एक श्रृंखला थी जिसमें ट्यूनीशिया, मोरक्को, सीरिया, लीबिया, मिस्र और बहरीन सहित कई मुस्लिम देश शामिल थे।
- इन देशों में घटनाएँ आम तौर पर 2011 के वसंत में शुरू हुई थी, जिसके कारण इसका नाम अरब स्प्रिंग या अरब वसंत पड़ा।
- अरब स्प्रिंग विरोध प्रदर्शनों से संबंधित एक ऐसा समूह था जो अंततः ट्यूनीशिया, मिस्र और लीबिया जैसे देशों में शासन परिवर्तन के परिणामस्वरूप संगठित हुआ। हालांकि, सभी आंदोलनों को सफल नहीं कहा जा सकता है।

संभावित प्रश्न (प्रारंभिक परीक्षा)

1. 'अरब स्प्रिंग' के सन्दर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:-
   1. यह लोकतंत्र समर्थक विद्रोह की एक श्रृंखला है।
   2. इसमें ट्यूनीशिया और बहरीन शामिल नहीं हैं।

   उपर्युक्त में से कौन-सा/से कथन सत्य है/हैं?
   (a) केवल 1
   (b) केवल 2
   (c) 1 और 2 दोनों
   (d) न तो 1 और न ही 2

2. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:-
   1. सूडान उत्तर-पूर्वी अफ्रीका में स्थित देश है।
   2. सूडान की सीमा लाल सागर से लगती है।
   3. सूडान के उत्तर-पश्चिम में दक्षिण सूडान, जबकि उत्तर में मिस्र स्थित है।

   उपर्युक्त में से कौन-से कथन सत्य हैं?
   (a) 1 और 2
   (b) 2 और 3
   (c) 1 और 3
   (d) 1, 2 और 3

1. **Consider the following statements regarding Arab Spring-**
   1. It is a series of democracy supporting protests.
   2. It doesn't include Tunisia and Bahrain

   Which of the above statements is/are correct?
   (a) Only 1
   (b) Only 2
   (c) Both 1 and 2
   (d) Neither 1 nor 2

2. **Consider the following statements-**
   1. Sudan is a country located in north-east Africa.
   2. The boundary of Sudan touches Red Sea.
   3. In the north west of Sudan is south Sudan whereas is north is Egypt.

   Which of the above statements is/are correct?
   (a) 1 and 2
   (b) 2 and 3
   (c) 1 and 3
   (d) 1, 2 and 3

संभावित प्रश्न (मुख्य परीक्षा)

प्रश्न:- हाल ही में सूडान और अल्जीरिया में सरकार-विरोधी प्रदर्शन को देखते हुए अरब स्प्रिंग 2.0 की प्रासंगिकता को बताइए। (250 शब्द)

Q. Elucidate the relevance of Arab Spring 2.0, considering the anti-government protests in Sudan and Algeria. (250 Words)

Committed

नोट : 23 अप्रैल को दिए गए प्रारंभिक परीक्षा (संभावित प्रश्न) का उत्तर 1(d) होगा।

629, Ground Floor, Main Road, Dr. Mukherjee Nagar, Delhi - 110009
Ph. : 011- 27658013, 9868365322